विचार बिन्दु

हम यहाँ किसी विशेष कारण से हैं। इसीलिए अपने भूत का कैदी बनना छोड़िये। अपने भविष्य के निर्माता बनिए। –रोबिन शर्मा

ईवी स्टेशनों की उपलब्धता से प्रदूषण रहित यातायात को बढ़ावा मिलेगा

बढ़ते प्रदूषण और हरित उर्जा को बढ़ावा देने के लिए पिछले कुछ वर्षों से देश और प्रदेश में ईलेक्ट्रिक वाहनों के उपयोग को बढ़ावा देने के प्रयास अब धरातल पर उतरने लगे हैं। दरअसल इलेक्ट्रिक वाहनों के उपयोग को बढ़ावा देने में सबसे बड़ी बाधा ईलेक्ट्रिक वाहनों के री चार्ज की आधारभूत संरचना जिस स्तर तक और जिस मात्रा में विकसित होनी चाहिए थी उतनी नहीं होने से सकारात्मक परिणाम प्राप्त नहीं हो रहे थे। हांलाकि केन्द्र सरकार ने प्रधानमंत्री ईलेक्ट्रिक ड्राइव रिवॅल्यूशन इन इनोवेटिव व्हीकल एन्हैंसमेंट (पीएम ई-ड्राइव) कार्यक्रम के तहत आधारभूत संरचना विकसित करने और ईवी के उपयोग को बढ़ावा देने के प्रयास जारी है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के प्रयास से राजस्थान में 262 अलग-अलग स्थानों पर 591 ईवी चार्जिंग स्टेशन स्थापित करने की स्वीकृति राजस्थान में ईवी के प्रयोग को बढ़ावा देने की दिशा में बड़ा और निर्णायक कदम है। खास बात यह है कि चार्जिंग स्टेशनों के लिए राज्य सरकार द्वारा स्थान भी उपलब्ध कराये जाने की पहल करने की घोषणा की गई है। केन्द्र सरकार द्वारा ईवी चार्जिंग स्टेशनों के लिए 81 करोड़ 12 लाख रुपये की राशि भी उपलब्ध कराई जाएगी। यह अपने आप में बड़ा और महत्वपूर्ण निर्णय है। अब ईलेक्ट्रिक वाहन खरीदने में आम आदमी किसी तरह का संकोच नहीं करेगा। राज्य सरकार द्वारा ईवी स्टेशनों की स्थापना के कार्य के लिए राजस्थान अक्षण उर्जा निगम को नोडल विभाग बनाते हुए यह अहम् जिम्मेदारी दी है।

एक मोटे अनुमान के अनुसार आज की तारीख में देश में करीब 50 लाख ईलेक्ट्रिक वाहन पंजीकृत है। जबकि 2023-24 की ही बात की जाएं तो तब तक 16 लाख 81 हजार के आसपास ईवी पंजीकृत थे। इनमें दो पहिया, ती पहिया, चौपहिया व अन्य वाहन शामिल है। यदि राजस्थान की ही बात की जाएं तो करीब 3 लाख ईलेक्ट्रिक वाहन राजस्थान में पंजीकृत है। जहां तक ईलेक्ट्रिक वाहनों की उपलब्धता की बात है तो देश में ईवी वाहनों के निर्माता भी अच्छी खासा मात्रा में है और दुपहिया, तिपहिया, चौपहिया व अन्य वाहनों के 60 तरह के मॉडल बाजार में आ गए हैं। इस प्रकार से देखा जाएं तो ईलेक्ट्रिक वाहनों के निर्माता और वाहनों की मांग दोनों ही बढ़ी है। ऐसे में यदि कोई संकोच रहा है तो वह ईवी के रीचार्ज की आधारभूत सुविधा के पर्याप्त मात्रा में नहीं होना ही रहा है। इस दिशा में केन्द्र सरकार से समन्वय बनाते हुए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रदेश में 591 ईवी स्टेशनों की स्थापना और इस पर होने वाले व्यय के लिए भी केन्द्र सरकार से ही 81 करोड़ रुपए से अधिक की राशि प्राप्त करना सरकार की बड़ी उपलब्धि मानी जानी चाहिए। क्योंकि एक बात स्पष्ट हो जानी चाहिए कि आने वाला समय इलेक्ट्रिक वाहनों का ही रहने वाला है। एक मोटे अनुमान के अनुसार और जानकारों की माने तो 2030 तक ईवी कारोबार में 30 प्रतिशत की ग्रोथ मानी जा रही है। एक मोटे अनुमान के अनुसार 2030 तक ईवी कारोबार भी 20 लाख करोड़ तक पहुंचने की संभावना मानी जा रही है।

खास बात यह है कि प्रमुख शहरों को स्थान देने के साथ ही नेशनल और स्टेट हाईवे पर भी 34 स्थानों पर चार्जिंग स्टेशन लगाए जाएंगे। जयपुर में 112 ईवी चार्जिंग स्टेशनों के साथ ही अजमेर में 49, उदयपुर में 39, कोटा में 28 पब्लिक ईवी स्टेशन लगाए जाएंगे। इससे सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि अब तक ईवी चार्जिंग स्टेशन की उपलब्धता को लेकर संदेह के कारण ईवी से लंबी दूरी की यात्रा करने में परेशानी महसूस की जा रही थी वह भी दूर हो सकेगी और लोग लंबी दूरी की यात्रा भी बिना किसी संकोच के कर सकेंगें।

सबसे अच्छी बात यह है कि ईलेक्ट्रिक वाहनों के रीचार्ज स्टेशनों के लिए स्थान व कितनी संख्या में कहां लगाये जाने हैं यह भी चिन्हित कर लिया गया है। राज्य में 262 अलग-अलग स्थानों पर 591 ईवी चार्जिंग स्टेशन स्थापित किये जाने का कार्यक्रम है। खास बात यह है कि प्रमुख शहरों को स्थान देने के साथ ही नेशनल और स्टेट हाईवे पर भी 34 स्थानों पर चार्जिंग स्टेशन लगाए जाएंगे। जयपुर में 112 ईवी चार्जिंग स्टेशनों के साथ ही अजमेर में 49, उदयपुर में 39, कोटा में 28 पब्लिक ईवी स्टेशन लगाए जाएंगे। इससे सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि अब तक ईवी चार्जिंग स्टेशन की उपलब्धता को लेकर संदेह के कारण ईवी से लंबी दूरी की यात्रा करने में परेशानी महसूस की जा रही थी वह भी दूर हो सकेगी और लोग लंबी दूरी की यात्रा भी बिना किसी संकोच के कर सकेंगें

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के प्रयासों से एक बड़ा निर्णय हो गया है। इस कार्य के लिए नोडल संस्था राजस्थान अक्षय उर्जा निगम को तय किया जा चुका है। ईवी के लिए स्थान व राशि भी स्वीकृत हो चुके हैं। ऐसे में अब सारी जिम्मेदारी इस कार्यक्रम को तय समय सीमा में धरातल पर उतारने की महती जिम्मेदारी है। राजस्थान अक्षय उर्जा निगम को चुनौती के रुप में लेते हुए इस कार्य को धरातल पर उतारना है ताकि एक तो ईवी वाहनों की उपयोगिता बढ़ सके। इसके साथ ही प्रदेश में प्रदूषण रहित आवागमन, कार्बन उत्सर्जन में कमी के साथ ही हरित उर्जा को बढ़ावा दिया जा सके। इसके साथ ही गुणवत्ता पर खास ध्यान देना होगा, लक्ष्य पूरा करने के चक्कर में गुणवत्ता से किसी तरह का समझौता नहीं किया जाना चाहिए। हरित उर्जा को बढावा देने और प्रदूषण रहित वाहन संचालन की दिशा में इस महत्वपूर्ण निर्णय का लाभ आम लोगों को मिलना चाहिए। इससे ईलेक्ट्रिक वाहनों की खरीद में भी आम नागरिक किसी तरह का संकोच नहीं करेंगे और प्रदूषण रहित वातावरण हो सकेगा।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

राशिफल गुरूवार 2 अप्रैल, 2026

पंडित अनिल शर्मा

चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा, गुरूवार, विक्रम संवत 2083, हस्त नक्षत्र सायं 5:39 तक, धुव्र योग दिन 2:20 तक, बव करण प्रातः 7:42 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कुम्भ, बुध-कुम्भ, गुरू-मिथुन, शुक्र-मेष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज मंगल मीन राशि में दिन 3:29 पर प्रवेश करेगा। आज चैत्री पूर्णिमा, सत्यव्रत है। आज हनुमान जन्मोत्सव, सर्वदेव दमनोत्सव है। आज जैन ओली पूर्ण होगी। आज से वैशाख स्नान आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:53 तक, चर 10:58 से 12:30 तक, लाभ-अमृत 12:30 से 3:35 तक, शुभ 5:08 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:21, सूर्यास्त 6:40

मेष
परिवार में चल रही स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय दूर होगा।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित धन प्राप्त होगा। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

धनु
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

वृष
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनःस्थिति में सुधार होगा। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आज व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

मिथुन
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखें। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है।

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

कर्क
व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक सुविधाओं में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

वृश्चिक
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

'श्री पीपा जयंती' पर विशेष : राज सन्यासी – सतोगुणी संत पीपाजी

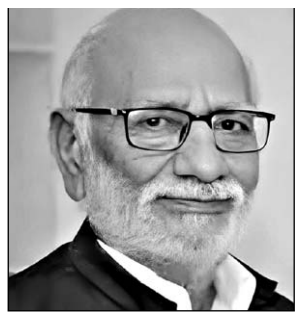

नरेंद्र कुमार चौहान

भारतीय भूमि की पावनता एवं इसकी उदात्त संस्कृति के कारण ही यहां की पावन धरा पर.... समय समय पर संत व महापुरुषों ने जन्म लेकर संस्कृति की अजय धारा को प्लावित रखा। यही परंपरा हमारे लिए अवतार की संज्ञा से संबोधित की गई है और इस अवतारवाद के अमर सिद्धांत ने ही मानवता के गुणों को आज दिन तक जीवित रखा। ऐसी ही विभूतियों में पीपा जी महाराज महान संत हुए हैं। आपका जन्म राजस्थान के जिला झालावाड़ के समीप गढ़ गागरोन. के खींची चौहान कुल गौत्र में हुआ। कालांतर में आप गढ़ गागरोन के राजा थे। प्रतापसिंह खींची (चौहान) के नाम से जाने जाते थे। ईनका जन्म चैत्र पूर्णिमा विक्रम संवत 1380 माना गया है। बाल्यावस्था से ही इनके ह्रदय में धार्मिक भावनाओं का अंकुर हो चुका था। राजसिंहासन पर बैठने पर भी यह धार्मिक भावना कम नही हुई। ये शक्ति के उपासक थे। परंतु शक्ति-भक्ति से ही इनके वैष्णव धर्म के प्रति अनुराग उत्पन हुआ। उन्होंने उस समय के सुविख्यात स्वामी रामानंदजी के पास काशी जाकर वैष्णव धर्म की शिक्षा ग्रहण की। इसके पश्चात महाराजा प्रतापसिंह खींची का गुरु कृपा से संत पीपाजी नामकरण हुआ। संत पीपाजी ने भक्ति धर्म के लिए अपना जीवन सिद्धांत ही बदल दिया और जीवनांत करने वाली शक्ति की प्रतीक तलवार का त्याग करके जीवन का पोषण करने वाली सुई को अंगीकार करके मानवता का पाठ पढ़ाया। यह पीपाजी की धार्मिक भावना और लोक कल्याण की सतोगुणि प्रवृत्ति का परिचायक है। शक्ति नहीं भक्ति ही मानवता के प्रेमवस्त्र को जोड़ सकती है। इसलिए पीपाजी ने यह संदेश फूंका।

परमारथ रै कारणै, जिनको जीवन अंत।
पीपा सोई सात पुरुष, सोई साचों संत।।
भलो बुरो सब एक है, जा के आदि न अंत।
जग हित जो हरि सेजये, पीपा सोई संत।।

संत पीपा जी का मत था कि परमात्मा के बनाए हुए सभी जीव हैं और सबको जीने का बराबर का अधिकार है। क्षत्रियों को परमात्मा की बनाई श्रष्टि की रक्षा करना चाहिए, हिंसा को बढ़ावा नहीं देना चाहिए, परमेश्वर के प्रति आस्था रखने वाले क्षत्रियों को तलवार की जगह सुई धारण कर, जोड़ने का काम कर जीवन का निर्वाहन करना चाहिए। संत पीपाजी ने गुरुजी से आज्ञा प्राप्त कर अपनी धर्मपत्नी साध्वी सीता सहचरी के साथ द्वारकापुरी को प्रस्थान किया। द्वारकापुरी में रहते हुए भक्ति साधना में तल्लीन इस संत दंपति पर भगवान की असीम कृपा हुई और द्वारकाधीश दर्शन के साक्षात के लिए सागर जल में कूद पड़े। जहां भगवान श्रीकृष्ण व रुकमणी को अगुवाई करते पाया। शेष शैय्यालीन भगवान विष्णु के सौम्यरूप का दर्शन कर संत दंपति परमानंद को प्राप्त हुए। परंतु लोक कल्याण के लिए भगवान ने उनको स्मृति चिन्ह छाप - कमलपुष्प, शंख, गदा, पद्म व गदा प्रदान कर आग्रह से स्वयं ने उन्हें समुंद्र से बाहर निकाला, जिसका भक्तमाल में उल्लेख मिलता है।

संत दंपति ने द्वारका से प्रभु की आज्ञा पाकर जूनागढ़ की ओर प्रस्थान किया...। बीहड वन में एक भयानक सिंह और सिंहनी से उनका सामना हो गया। पीपाजी व सहचरी सीता के दिव्य प्रभाव के कारण वे पालतू जानवर की तरह संत चरणों ने लौटने लगे। पीपाजी ने सिंहराज के मस्तिष्क पर भगवान के नाम से तिलक लगाकर गले में माला पहनाकर कहा कि वह भविष्य में किसी जीव को न सताऐ। उस पर उपदेश का प्रभाव हुआ। उसी के कारण उसने शिकार करना छोड़ दिया। इस घटना का एक दोहा भी प्रचलित है-

परस प्रणाली सरस भाई, सकल विश्व मंगल कियो।
पीपा-प्रताप जग वासना, नाहर को उपदेश दियो।।

विभिन्न ग्रंथों में इसका उल्लेख मिलता है कल्याण के अंक में भी वर्णन आया है कि जूनागढ़ के इसी नाहर ने ही अपने पुनर्वजन्म में नरसी मेहता के रूप में जन्म लिया। संतों के चरित्र के साथ बहुत सी चमत्कारिक बातें जुड़ ही जाती है क्योंकि वे समाज सुधारक होते ही है और उनके उपदेशों से मानव जाति का कल्याण भी होता है। सतोगुणि संत पीपाजी का चरित्र भी चमत्कारों से भरा पड़ा है। प्रभु कृपा से पीपाजी ने जन कल्याण के देश भर में भ्रमण किया। अनेकानेक स्थाओं का भ्रमण करते पीपाजी ने आगत लोगों को उपदेश देते बताया कि हिंसा त्याज्य है, प्रभुभक्ति सर्वोच्च साधना है, सत्य का पालन-अहिंसा का व्रत, परोपकारी की भावना, लोभ-स्वार्थ का परित्याग और मन, वचन और कर्म से समस्त प्राणियों की सेवा ही.. मानव जीवन की सर्वोत्तम उपलब्धि है। पीपाजी ने पाप कर्म से दूर रहने का सन्देश देते कहा कि -

पीपा पाप न कीजिए, अल्गो रहिजे आप।
करणी जासी आप री, कुण बेटो कुण बाप।।

निर्दोष जीवों का शिकार कर भक्षण करने वालों को चेतावनी देते हुए कहा कि -

जीव मार जौहर करे, खाता करे बखाण।
पीपा परत्तख देख ले, थाली मांय मसाण।।

क्षत्रिय वंश में जन्म लेने के बावजूद क्षत्रियों को उद्बोधन करते हुए संत पीपाजी ने कहा कि... क्षत्रिय जाति का धर्म लोक रक्षा करना है न की उदरपूर्ति हेतु हिंसा करके अनाचार फैलाना। सत्य व अहिंसा का प्रचार इतने वेग से हुआ कि अनेक क्षत्रिय पीपाजी के अनुयाई बन गए। क्षत्रियों के सामने यह विडंबना थी कि तलवार कैसे छोड़े, परंतु पीपाजी के सद उपदेशों के प्रभाव से-

जो ब्रह्मामांडे सो ही पिंडे, जो खोजे सो पावै।
पीपा प्रणवै परम तत्व कूं, सतगुरु हुआ लखावै।।
पीपा पारस परसतां, लोह कंचन होय।
सिद्ध के कांटे बैठता, साधक सिद्ध हो जाय।।

पीपाजी के सद उपदेशों से एक नूतन सतोगुणी समाज की रचना होने लगी। इनके आव्हान पर अनेक परिवार तलवार की वृत्ति त्याग कर सुई-धागे की वृत्ति को अपनाने लगे। जीवनयापन के लिए पीपाजी के अनुयायियों ने भी काया का संयम सुई से और परोपकार के धागे से सीना शुरू कर दिया और यही सिंवन कला बेरोजगारी मिटाती, शांति का पाठ पढ़ाती, विभेदों को मिटाती एकता का जामा सीने लगी। सतोगुणी संत पीपाजी का जीवन समाजोत्थान के लिए उत्सर्ग करने करने वाले व्यक्ति का जीवन है जिसकी साधना से मानवीय मनोवृति में महान परिवर्तन आया और सिवन कला के माध्यम से विचार की कार्यों की व जीवन की दृष्टि ही बदल गई। उनके द्वारा रचित भक्ति साहित्य आज भी लोगों का मार्ग दर्शन करता है।

–नरेंद्र कुमार चौहान,
संपादक- श्री पीपाजी प्रकाश
दिलीपनगर, लालसागर,
जोधपुर

ईरान युद्ध में मध्यस्थता से आखिर क्या हासिल करना चाहता है पाकिस्तान?

डॉ. योगेश शर्मा

हम दलाल देश नहीं हो सकते - भारत के खिदेश मंत्री एस. जयशंकर की यह तीखी टिप्पणी भारत की रणनीतक स्वायत्तता और संतुलित विदेश नीति का संकेत है। यह प्रसंग उस समय सामने आया है जब ईरान-अमेरिका युद्ध में पाकिस्तान द्वारा मध्यस्थता किए जाने का विचार अंतरराष्ट्रीय राजनीति में तैर रहा है। इस पर विरोधाभासी विश्लेषण सामने आ रहे हैं। कोई इसे पाकिस्तान की विदेश नीति का मास्ट्र स्ट्रोक कह रहा है, तो कोई इसे उसकी कूटनीतिक मजबूरी बता रहा है। परंतु प्रश्न यह है कि आखिर पाकिस्तान को इससे क्या हासिल होने की उम्मीद है? इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए कुछ ऐतिहासिक तथ्यों और भू-राजनीतिक वास्तविकताओं का गंभीर विश्लेषण आवश्यक है।

यह पहली बार नहीं है जब पाकिस्तान ने अमेरिका, या किसी महाशक्ति को खुश करने की कोशिश की हो। शीत युद्ध के दौर से ही, जब एक तरफ भारत गुटनिरपेक्षता के व्यापक आंदोलन को तीसरी दुनिया-जिसे अब ग्लोबल साउथ के रूप में जाना जाता है- का लक्ष्य बना रहा था, वहीं पाकिस्तान अमेरिका-समर्थित सैनिक संगठनों का सदस्य बनने में रुचि ले रहा था। इसकी पृष्ठभूमि में कश्मीर का वह विशेष संदर्भ भी शामिल था, जिस पर 1947 में पाकिस्तान को युद्धभूमि में पराजय मिल चुकी थी। पाकिस्तान के हुक्मरानों के लिए यह आवश्यक था कि इसका कोई कूटनीतिक विकल्प तैयार करें। हालांकि उसे ऐसा अवसर तब मिला जब भारत की तत्कालीन सरकार ने एक गलत निर्णय के चलते कश्मीर के व्षिय को संयुक्त राष्ट्र के अंर्तगत प्रस्तुत कर दिया।

महाशक्तियों को खुश करने की पाकिस्तान की लालसा यहीं समाप्त नहीं हुई। 1962 के भारत-चीन युद्ध के बाद 1963 में उसने चीन के साथ अपनी मैत्री को आगे बढाया और कश्मीर के अवैध रूप से कब्जाए गए एक क्षेत्र को चीन को सौंप दिया। 1971 के भारत-पाक युद्ध में भी दुनिया ने पाकिस्तान के प्रति अमेरिका के प्रेम को देखा, जब अमेरिकी युद्धपोत भारत पर मनोवैज्ञानिक दबिश प्रस्तुत करने के लिए आया। हालांकि भारत इस समय तक भूतपूर्व सोवियत संघ से सहयोग प्राप्त कर चुका था, जिसने इस मनोवैज्ञानिक दबिश से भारत को शीघ्र ही मुक्त कर दिया।

एक और उदाहरण 1980 के दशक में सामने आता है, जब अफगानिस्तान से सोवियत संघ को बाहर निकालने के लिए पाकिस्तान ने अमेरिका को सहायता की पेशकश की। हालांकि इसमें हित पाकिस्तान का ही अधिक था, क्योंकि अमेरिका से मिलने वाली आर्थिक सहायता की बदौलत पाकिस्तान ने दक्षिण एशिया में आतंकवाद को बढा दिया, जिसके केंद्र में पाकिस्तान द्वारा भारत का विरोध ही था। ऑपरेशन सिंदूर के समय भी पाकिस्तान के सैन्य प्रमुख और राजनीतिक नेतृत्व ने जिस प्रकार अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड टरंप को श्रेय दिया, वहां महाशक्तियों की खुशामद या चापलूसी करने की पाकिस्तान की प्रवृत्ति है।

पाकिस्तान के आर्थिक हालात बदतर रहे हों, राजनीतिक अस्थिरता चरम पर रही हो, पाकिस्तान की कूटनीति का एक महत्वपूर्ण पक्ष उसे पश्चिम एशिया के इस्लामिक राष्ट्रों का नेतृत्व करने की इच्छा से भी जोड़कर देखा जाता है। वास्तव में उसने अपने परमाणु हथियारों का विकास करके पश्चिम एशिया के राष्ट्रों पर मनोवैज्ञानिक प्रतिभा अवश्य प्रस्तुत किया है। यही कारण है कि तुर्की और सऊदी अरब जैसे पश्चिम एशिया के ताकतवर देश पाकिस्तान की न्यूक्लियर अम्रेला को सुरक्षा के रूप में देखने लगते हैं। सऊदी अरब-पाक रक्षा समझौता भी इसका एक उदाहरण है। यही कारण है कि जब-जब वह पश्चिम एशिया के देशों के नजदीक आया है, उसने भारत के घरेलू मामलों - खासकर मुस्लिम आबादी के साथ होने वाले व्यवहार और कश्मीर मामले - को प्रमुखता देने की कोशिश की है। यह बात अलग है कि भारत की आंतरिक राजनीति में धर्मनिरपेक्षता के साथ मुस्लिम समुदाय को दी गई धार्मिक स्वतंत्रता और कश्मीर के मुद्दे पर कीर्तिमान सरकार के मजबूत दृष्टिकोण - जो अनुच्छेद 370 के प्रावधानों की समाप्ति से दिखाई देता है - ने पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब दिया है। साथ ही, पश्चिम एशिया के कमोबेश सभी देशों से भारत के न केवल अच्छे संबंध रहे हैं, बल्कि भारत के 8-9 मिलियन से अधिक प्रवासी भी इन देशों की आर्थिक समृद्धि में योगदान देते हैं। भारत ने इस क्षेत्र से अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं का आयात भी किया है और अपनी धर्मनिरपेक्ष छवि के साथ इन देशों के मुस्लिम समुदाय तक सकारात्मक संदेश फैलाकर पाकिस्तान की कूटनीति या छल-नीति को सफल नहीं होने दिया।

पाकिस्तान को यह लगता है कि यदि पाकिस्तानी मध्यस्थता सफल हो गई और ईरान युद्ध रुक गया, तो पश्चिम एशिया के अरब देशों में उसका कद बढेगा, जो पहले से ही क्षेत्र में ईरान के बढते प्रतिभा से चिंतित हैं। वर्तमान युद्ध में ईरान ने जिस प्रकार खाड़ी देशों को निशाना बनाकर नुकसान पहुँचाया है, उसके बाद ये देश युद्ध रुकने पर पाकिस्तान को धन्यवाद देने की मुद्रा में हो सकते हैं - कम-से-कम ऐसा पाकिस्तान को प्रतीत होता है। पाकिस्तान को यह भी लगता है कि यदि उसकी मध्यस्थता सफल हो गई, तो वह एक साथ दो प्रतिभाशाली महाशक्तियों - चीन और अमेरिका - की नजरों में विशेष महत्व प्राप्त कर लेगा। इससे एक ओर उसके आर्थिक हालात में सुधार हो सकता है, तो दूसरी ओर एशिया में उसे कूटनीतिक बढत भी मिल सकती है। बलूचिस्तान के मुद्दे पर भी पाकिस्तान का ईरान से तनाव रहा है। ऐसे में मध्यस्थता के माध्यम से उसे ईरान के साथ-साथ बलोच विद्रोह को दबाने का अवसर मिल सकता है। अफगानिस्तान में भी तालिबान की पुर्नस्थापना के बाद से पाकिस्तान का उससे संर्घष जारी है। इस मध्यस्थता से वह अफगान पक्षों को भी अपनी कूटनीतिक सक्रियता का संदेश देने में सफल हो सकता है।

हालांकि मिर्जा गालिब की पंक्तियाँ यहाँ सटीक बैठती हैं कि 'दिल को बहलाने को गालिब ये ख़याल अच्छा है।' पाकिस्तान का अतीत सैन्य शक्ति बनाम राजनीतिक संघर्ष का रहा है, और वहाँ सेना के प्रभाव ने उसे कभी राजनीतिक दृष्टि से स्थिर लोकतंत्र बनने ही नहीं दिया। वर्तमान में भी पाकिस्तान की सेना का प्रमुख आसिम मुनीर जिस तरह स्वयं को आगे रख रहा है, वह एक बार फिर पाकिस्तान में भविष्य की सत्ता-पलट संभावनाओं को बरकरार रेखता है।

दूसरी तरफ, भू-राजनीति का एक महत्वपूर्ण कारक अर्थशक्ति है; और चाहे पश्चिम एशिया हो, यूरोप, चीन या अमेरिका - सबको भारत के मानव संसाधन, विनिर्माण क्षमता, तकनीकी प्रगति और विशाल बाजार से आकर्षण है। संघर्ष के बीच जिस प्रकार भारत की ऊर्जा आपूर्ति वाले जहाज सुरक्षित रूप से होर्मुज जलडमरूमध्य को पार कर रहे हैं, ईरान उनकी सुरक्षित वापसी सुनिश्चित कर रहा है, और महाशक्तियाँ भी उनकी सुरक्षित आवाजाही में रुचि रखती हैं; जिस प्रकार प्रवासी भारतीय सुरक्षित घर लौट पा रहे हैं; और जो लोग खाड़ी देशों में हैं, पर्याप्त सुरक्षा में हैं; तथा ईरान और अन्य संबंधित पक्ष भारत के साथ अच्छे संबंध बनाए हुए हैं - यह सब भारत की कूटनीतिक स्थिति को मजबूत करता है। प्रधानमंत्री मोदी जिस प्रकार इस संघर्ष में विभिन्न पक्षों के साथ संपर्क बनाए हुए हैं, वह भारत के वैश्विक महत्व की प्रचंड उद्घोषणा है। यही स्थिति भारत को विश्व राजनीति और वैश्विक भू-राजनीति का एक बड़ा और श्रेष्ठ खिलाड़ी बनाए रखने में सहायक है। ऐसे में पाकिस्तान कूटनीतिक मध्यस्थता के नाम पर चाहे जितना जोर लगा ले, भारत दुनिया की पहली पसंद बना रहेगा।

–डॉ. योगेश शर्मा,
(लेखक संवैधमनिक अध्येतम और अंतररमष्ट्रीय मर्लों के विशेषज्ञ हैं)

नाटो-तेल-परमाणु के बहाने गल्फ की गप्प (गल्प)

रामनिवास बैरवा

मध्य पूर्व या खाड़ी के देशों में वर्तमान युद्ध के दौरान होर्मुज स्ट्रेट यानि कि होर्मुज जलडमरू मध्य पर ईरान के नियन्त्रण को हटाने के लिए अमरीका ने जापान से अपने बेड़े को खाड़ी में बुला लिया है परन्तु अमरीका की अकेले की हिम्मत नहीं हो रही है कि वह उस समुद्री मार्ग को ईरान से मुक्त करवा ले। इसलिए उसने अन्य देशों के अलावा अपने वफादार नाटों देशों को सैनिक जहाज और सेनाएं भेजने के लिए कहा है परन्तु सभी ने, यहां तक कि नाटों के सदस्य देशों ने भी इस मामले में अमरीका का आदेश मानने से मना कर दिया है। ऐसे में अमरीका का विश्वास डगमगा रहा है। सोवियत संघ के विघटन के बाद कई यूरोपीय देशों ने नाटों नामक संगठन को भंग कर देने की बात कही थी, लेकिन युद्ध उन्मादी अमरीका ने अपने विशेषाधिकार के तहत नाटों को भंग करने से मना कर दिया और यूक्रेन को, यूरोपीय देश होने के नाते, यूरोपियन यूनियन और नाटों संगठन का सदस्य बनाने का लालच देकर रूस से युद्ध में धकेल दिया। यूक्रेन के युद्ध में यूरोप के नाटों देशों ने कोई सक्रिय भूमिका निभाने से मना कर दिया। पूंजीवाद और राजशाही के यूरोपीय देश सैकड़ों वर्षों से कई युद्धों को झेल चुके हैं। अब उन देशों की जनता नहीं चाहती कि उन्हें और किसी युद्ध की विभिषिका को सहन करना पड़े। उनको नाटों से अधिक यूरोपियन यूनियन की आवश्यकता है।

यह तो निर्विवाद है कि पूंजीवादी-साम्राज्यवादी देश अमरीका, यूरोप के सभी देश आदि सिर्फ अपनी पूंजी के विस्तार के लिए काम करते हैं और उस पूंजी की रक्षा के लिए सेनाओं और सैन्य साजो-सामान का व्यापक विस्तार करते हैं। अपने मानवतावादी दिखावे के लिए इन देशों के द्वारा शुरू से ही संयुक्त राष्ट्र संघ का इस्तेमाल किया जाता रहा है ताकि कम्युनिस्ट विरोधी सोवयित संघ की तरफ सम्भावित झुकाव वाले देशों के शासकों का बचाव किया जाता रहे। लेकिन सैनिक विस्तार और उनके लिए दुनिया के विभिन्न भागों में, विभिन्न देशों में सैनिक अड्डे बनाये गये। उन्हीं में ऐसे गल्फ देशों में अमरीका द्वारा अपने सैनिक अड्डे बनाना आवश्यक था।

दूसरे विश्वयुद्ध के फौरन बाद में जर्मनी से बेदखल यहूदियों ने अपनी मातृभूमि इजराइल से फिलीस्तीनियों को बेदखल करके अपना देश बनाया। लेकिन, गल्फ के देशों में अपना आधार पक्का करने के लिए पहले इजराइल के माध्यम से पड़ौस के देशों सहित मिस्र के स्वेज इलाके को अपने अधिकार में लिया। फिर मिश्र-इजराइल समझौता करवा कर शान्ति का नोबेल पुरस्कार भी ले लिया और सभी अरब देशों को भय दिखाकर उन देशों में अपने सैनिक अड्डे भी बना लिये और उनके पेट्रोलियम को अपनी पूंजी का हिस्सेदार बनाने के लिए पेट्रो-डॉलर का सिद्धांत भी पैदा किया। पेट्रो-डॉलर की उस योजना में उन शेखों-अमीरों की सरकारें शामिल हुई जो ओटोमन साम्राज्य के विघटन के बाद अस्तित्व में आये थे। इसमें ईरान जैसे समृद्ध इतिहास, संस्कृति और पेट्रोलियम उत्पादन के कारण आर्थिक रूप से सम्पन्न देश पेट्रो-डॉलर की उस योजना में शामिल नहीं हुए थे और वे सोवियत संघ के लिए भी खुले रहे।

इस प्रकार अमरीकी पूंजीवाद, जापान के दो शहरों पर परमाणु बम गिराकर दूसरे विश्वयुद्ध के बाद से युद्ध उन्मादी बना रहा और उसकी अपनी परमाणु सम्पन्नता से पूंजीवादी दुनिया में उसकी चौ